विश्व हित मानस मण्डल



विश्व हित मानस मण्डल

श्री गंगानगर (राज.)

॥ श्री राम ॥

'विश्व हित मानस मण्डल'



जय जय जय हनुमान गुसांई
कृपा करहु गुरुदेव की नांई



देह धरे कर यह फल भाई।
भजिय राम सब काम बिहाई॥



हानि न जग ये हो सम कछु भाई।
भजिय न रामही नर तन पाई॥



कलियुग केवल नाम अाधारा।
सुमिरि सुमिरि नर उतरहिं पारा॥



तुलसी 'रा' के कहत ही निकसत पाप पहार।
फिर अावन नहीं पात है, देत 'म'कार किवार॥

दिनांक 24-10-78

वितरक

विश्व हित मानस मण्डल
श्री गंगानगर

"विश्व हित मानस मंडल"

॥ श्री राम जो ॥

बन्धुओं,

आज मानव समाज में बहुत से अभाव बढ़ रहे हैं। अभाव की समस्या को लेकर समाज में संघर्ष भी चल रहे हैं।

किन्तु सदभाव का अभाव होना अशांति का मूल कारण है।

इस समस्या के समाधान का हम सभी ने मिलकर प्रयत्न करना है।

"जहां सुमति तहं सम्पति नाना"

अगर हम सभी समय रहते नहीं जागे, तो मानवता की द्रोपदी को दानवता के दुःशासन से बचा सकना अत्यन्त कठिन हो जाएगा।

सज्जनों,

सद्भाव एवं शुभ संस्कार की जागृति के लिये अपने नगर में "विश्व हित मानस मन्डल" की स्थापना की गई है तथा साप्ताहिक अखण्ड पाठ, और नवरात्रों में नव्हाण पारायण, तुलसी जयन्ती, श्री हनुमान जयन्ती आदि कार्यंक्रम सोत्साह नियमित रूप से सम्पन्न हो रहे हैं।

"आप सभी विश्व हित के स्वभाव से "मण्डल" के विकास में सक्रिय सहयोग देंगे, ऐसा हमें विश्वास है !!

सदस्यता अभियान को सफल बनाने का प्रयत्न करिये ।

सोई गुनज्ञ सोई बड़भागी ।
जो रघुवीर चरण अनुरागी ।।

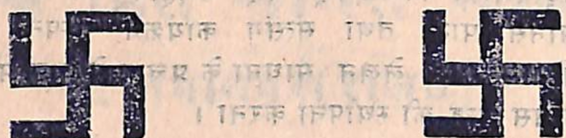
अति हरि कृपा जाहि पर होई ।
पाँव देई एहि मारग सोई ।।

सदस्यता शुल्कः–प्रतिदिन राम नाम लेखन एवँ मानस का नियमित पाठ एवं दुर्व्यसनों का त्याग ।

निवेदकः—

"विश्व हित मानस मण्डल"
श्री गंगानगर (राज.)

विश्व हित मानस मण्डल





उद्देश्य

1. मानव हित का भाव एवम् मानस श्रद्धा को जागृत करना 'वसुधैव कुटुम्बकम" के सदभाव को बढ़ाना ।

2. दुर्व्यसन, दुर्बलता, दुर्विचार, एवम् दुर्व्यवहार का त्याग करना और विश्व हित हेतु मानस पाठ तथा प्रार्थना करना ।

3: धार्मिक कार्यों में आवश्यकतानुसार यथा सम्भव आर्थिक सहायता करना ।

4. देश धर्म एवम् मातृ-भूमि की रक्षा हेतु जीवन-दान का संकल्प लेना ।

5. व्यक्तिगत स्वार्थ एवम् अहं को त्यागकर विश्वहित हेतु सेवा कार्य करना. और इन उद्देश्यों वाली अन्य संस्थाओ से सहयोग करना । दम्भ पाखंड तथा दहेज आदि सामाजिक कुरीतियों का त्याग करना ।

कार्यक्रम :

1. सद्‌विचारों का एवम् सत् साहित्य का प्रचार करना मानस पाठ, तथा सत्संग कार्यक्रम सम्पन्न करना। श्रीराम नाम लेखन साधना के प्रचार से नाम मंदिर एवं मानस केन्द्र की स्थापना करना।

संकल्प–

मैं प्रभु श्री राम को साक्षी मानकर शपथ लेता हूं कि मैं विश्व हित मानस मण्डल के हेतु निष्काम निस्वार्थ सेवा करता रहूंगा। इसके विकास को तन मन धन से सहयोग करूंगा। मण्डल के पवित्र नियमों का पालन करूंगा।



विश्व हित मानस मन्डल का प्रमुख केन्द्र श्री राम नाम मन्दिर वृन्दावन धाम होगा।

राम नाम को अंक है, सब साधन हैं शून।
अंक गये कुछ हाथ नहीं, अंक रहे दस गून॥



॥ श्री हित ॥

विश्व हित मानस मण्डल

श्री गंगानगर(राज०)



जय जय जय हनुमान गुसांई ।
कृपा करो गुरूदेव की नाँई ॥



प्रेरक — प्रभु श्री राम जी
सद्‌गुरुदेव — श्री हनुमान जी
अध्यक्ष — गोस्वामी श्री तुलसीदासजी
संस्थापक — श्री शकुन्तला गोस्वामी

卐 कार्यकारिणी समिति 卐

— संरक्षक —

श्री श्री १०८ स्वामी ब्रह्मदेवजी

पं० रूपचन्द जी मुलतानी

श्री जुगलकिशोर लीला

श्री लीलाधर मित्तल

श्री मनोहरलाल लीला

गुसाई श्री पूर्णनाथ जी



॥ श्री राम ॥

संचालक—पं० तनसुखराम शर्मा

मंत्री—श्री योगेश शर्मा

उपमन्त्री—श्री प्रेम बंसल

कोषाध्यक्ष—श्री अशोक सेठी

उपकोषाध्यक्ष—श्री लालचन्द बंसल

प्रचारमन्त्री—श्री केसरदेव सोनी

श्री गंगाराम अरोड़ा

संयोजक—श्री कन्हैयालाल बंसल

सह संयोजक—श्री हनुमानप्रसाद बंसल

श्री विश्वहित मानस मण्डल

सदस्य मंडल

श्री हनुमानप्रसाद जी
श्री त्रिभुवनसिंह
श्री सुभाष शर्मा
श्री राजकुमार सरावगी
श्री राजेन्द्रकुमार अरोड़ा
श्री हरिप्रसाद शर्मा
श्री अशोककुमार लीला
श्री अनिलकुमार सेठी
श्री दिनेन्द्र खन्ना
श्री रामचन्द्र कालड़ा
श्री कृष्णगोपाल भूतड़ा
श्री फकीरचन्द गर्ग
श्री केदारनाथ बोगी
श्री सतीशकुमार गर्ग
श्री दीपचन्द अग्रवाल
श्री अरूण अग्रवाल
श्री श्याम चुघ
श्री घनश्यामदास सर्राफ
श्री रोशनलाल जिन्दल
श्री प्रवीणकुमार धींगड़ा
श्री शेराराम जी

अनमोल बोल

1. यथा तन की खुराक भोजन
   तथा मन की खुराक प्रभु भजन है।

2. दुर्बलता, दोष, दुःख, दुर्गन्ध, रोग से युक्त
   इस शरीर से सुख की आशा करना दुर्भाग्य है ॥

3. दान सो निधि नहीं।
   प्रेम सी विधि नहीं॥
   संयम सी सिद्धि नहीं।
   प्रभुनाम सी पूर्ण निधि नहीं॥

4. काम क्रोध सा शत्रु नहीं
   दया प्रेम सा मित्र नहीं
   संयमशील सा भूषण नही।
   धैर्य सन्तोष सा धन नहीं॥
   (गोस्वामी)

5. सोचिय गृही जे मोहबस करई करम पथ त्याग।
   सोचिय यती प्रपंच रत, बिगत बिवेक बिराग॥

6. तुलसी हरिके भजन में ये पांचों न सुहात।
   विषय भोग, निद्रा, हंसी, जगत प्रीत, बहुबात॥



॥ श्री राम ॥

भजन

हे राम हरे, हे राम हरे, हे राम हरे, हे राम हरे ॥ टेर ॥

तामस निद्रा में सोया हूं, मद मोह महा भरमार रहे।
जब स्वामी ही है देख रहे, तो कौन मेरा उद्धार करे ॥1॥ हे राम.

ब्रह्मा, शम्भू और विष्णु भी, जिसकी माया में नाच रहे।
ऐसे स्वामी के रहते भी, प्रभुता कर पंच विकार रहे ॥2॥

जब दया दृष्टि की गठरी को, तुमने कोने रख छोड़ा है।
तो ऐसा कौन उदार मिले, जिससे जा दास पुकार करे ॥3॥

माना कुछ साधन नहीं होता, निर्मल मन की शरणागति भी।
पर मेरा इसमें दोष है क्या, उर प्रेरक जगदाधार हरे ॥4॥

माना मैं पापी नामी हूं, पर स्वामी तो अघ हारी है।
करुणाकर स्वामी के रहते, सेवक क्यों सोच विचार करे ॥5॥

शठ भी हूं मैं कृतघ्न भी हूँ, वाचाल भी हूं हद से ज्यादा ।
पर जैसा हूं प्रभु तेरा हूं, नहीं और कोई आधार हरे ॥6॥

त्यागे ममता शरणागति हो, मिलता प्रभु का अनुराग तभी।
माया को बल प्रभु का मिलता, हो कैसे माया त्याग हरे ॥7॥

इच्छा तो है शरणागति हो, प्रभु में मेरा अनुराग रहे।
यह भी आधीन प्रभू के हैं, वो देवें या लाचार करे ॥8॥

विश्वास रहे न रहे प्रभु में, शरणागति भाव बने न बने।
"तनसुख" प्रभु को सब सौंप रहा, जो चाहे सो सरकार करे ॥9॥

धन्यवाद ज्ञापन

"धन्यधरी सोई जब सतसंगा"

विश्व हित मानस मण्डल श्री गंगानगर के प्रथम वार्षिक मूल्यांकन के अवसर पर सम्पूर्ण वर्ष को गतिविधियों पर नजर डालते हुए इस बात की प्रसन्नता होती है कि मण्डल जिन उद्देश्यों को लेकर चला था उनमें शनैः-शनैः सफलता प्राप्त करता जा रहा है। पूरे वर्ष भर, नियमित साप्ताहिक अखण्ड पाठ दो नव्हाण परायण, तुलसी जयन्ती एवं श्री हनुमान जयन्ती उत्सव धूमधाम से मनाकर मंडल के सदस्य स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

विशेषत: इस वर्ष मण्डल के सत् प्रयत्न से इसका वार्षिक सत्संग महोत्सव भी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है।

पं. श्री रुपचन्दजी मुलतानी के अथक प्रयत्न एवं परिश्रम से हो यह कार्य उत्तम रूप से पूर्ण हुआ।

परम पूज्य १०८ स्वामी श्री ब्रह्मदेव जी महाराज के पावन उपदेश एवं आशीर्वाद से कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन हुआ है।

मंडल की संस्थापिका परम पूज्य मां देवी शकुन्तलाजो गोस्वामी के श्री राम कथा अमृत की भक्ति गंगा के पावन प्रवाह से नगर के हजारों नर-नारी कृत-कृत्य हुए हैं। प्रभु हमें निरन्तर इस पथ पर अग्रसर होने की शक्ति दे। आपका सहयोग भी अपेक्षित है।

मैं कृत्य कृत्य भयऊ अब तव प्रसाद विश्वेस ।
उपजो राम भगति दृढ बीते सकल कलेश ॥

कुछ तो किया करो

सोये पड़े हो काहे तुम, कुछ तो किया करो।
एक राम नाम मन्त्र है, उसको जपा करो॥

साधन करो नित नेम से, सन्ध्या किया करो।
मन्दिर में जाके रोज, तुलसी जल लिया करो॥

यह भी न तुमसे बन सके, तो यों किया करो।
मिथ्या वचन को छोड़कर, साधन किया करो॥

यह भी न तुमसे बन सके तो यों किया करो।
माता पिता की प्रेम से सेवा किया करो॥

यह भी न तुमसे बन सके, तो यों किया करो।
मुख से कभी किसी की, ना निन्दा किया करो॥

जो कुछ न कर सको तो, बस इतना किया करो।
तन,मन से सीताराम का, सुमिरन किया करो।



स्तुति

छं० जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता ।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधु सुता प्रिय कंता ॥
पालन सुरधरनी अद्भुत करनी मरम न जानई कोई ।
जो सहज कृपाला दीन दयाला करउ अनुग्रह सोई ॥
जय जय अविनासी सब घट बासी व्यापक परमानन्दा ।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा ॥
जेहि लागी बिरागी अति अनुरागी बिगत मोह मुनिबृंदा ।
निसि बासर ध्यावहिं गुन गनगावहिं जयति सच्चिदानंदा ॥
जेहि सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा ।
सो करउ अधारी चिन्त हमारी जानिय भगति न पूजा ॥
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरुथा ।
मन बच क्रम बानि छांड़ि सयानी सरन सकल सुरजूथा ॥
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहूं कोउ नहिं जाना ।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्री भगवाना ॥
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा ।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पदकंजा ॥

दोहा- जानि सभयसुर भूमि सुनि बचन समेत सनेह ।
गगन गिरा गंभीर भई हरनि सोक संदेह ॥



1।185।0

स्तुति

छं० भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनी मन हारी अद्भुत रूप बिचारी ॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुजचारी ।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी । (1)

कह दुई कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधी करो अनंता ।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता ॥
करूना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहि श्रुति संता ॥
सोमम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्री कंता ॥ (2)

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहे ।
मम उर सो बासी यह उपहासो सुनत धीर मति थिर न रहे ॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहें ।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहे ॥ (3)

माता पुनी बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजे सिसु लीला अति प्रिय सीला यह सुख परम अनूपा ॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होई बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहि हरि पद पावहि तेन परहि भवकूपा ॥ (4)

दोहा- बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गोपार ॥

1।192।0

आरती

श्री रामजी की

आरती रघुवर लाला की, सांवरिया नैन विशाला की
कमल कर धनुषबान धारे, सलोने नैना रतनारे,
सुछवि लखि कोटि काम हारे,
अलक की वलन, पलक की चलन, पीत पट हलन,
लटक सुन्दर बन माला की। सांवरिया नंन विशाला की
संगसिय शोभा की खानो, विराजे जगत जननी रानी,
प्रेम----भक्तिरस की दानी
भरत से बीर, लखनरणधीर, प्रजाजन भीर
शत्रुहन रूप रसाला को, सांवरिया नैन विशाला की ॥
सदा प्रभु दीनन हितकारी, अधम केवट, शबरी तारी
गीध की करम गति न्यारी,
सुरन के ईस, कोशलाधीश, रक्ष जगदीश,
शम्भू हिरदै सुखपाला की सांवरिया नैन विशाला की
चरण चांपत अंजनी को लाल, प्रेम रस बाँटत दीनदयाल,
बरस रही पुष्पों की जयमाल
भक्त भय हरण, सदा सुख करनदीन के शरण
जानकी नाथ कृपाला की, साँवरिया नैन विशाला की
आरती रघुवर लाला की। सांवरिया नैन विशाला की ॥

शिवाजी प्रिंटर्स, श्री गंगानगर (राज.)